विनायक जी की कहानी

एक बार गणेश जी एक छोटे बालक के रूप में चिमटी में चावल और चम्मच में दूध लेकर निकले। वे हर किसी से कह रहे थे कि, 'कोई मेरी खीर बना दो, कोई मेरी खीर बना दो।' एक बुढ़िया बैठी थी उसने कहा, 'ला मैं बना दूं।' वह छोटा सा बर्तन चढ़ाने लगी तब गणेश जी ने कहा कि, 'दादी माँ छोटी सी भगोनी मत चढ़ाओ तुम्हारे घर में जो सबसे बड़ा चरू हो वही चढ़ा दो।' बुढ़िया ने वही चढ़ा दिया। वह देखती रह गई कि वह तो पूरा भर गया है। गणेश जी ने कहा, 'दादी माँ मैं नहा कर आता हूँ।' खीर तैयार हो गई तो बुढ़िया के पोते-पोती खीर खाने के लिए रोने लगे। बुढ़िया ने कहा, 'गणेश जी आपके भोग लगना।' कहकर चूल्हे में थोड़ी सी खीर डाली और कटोरे भर-भरकर बच्चों को दे दी। पड़ोसन ऊपर से देख रही थी। बुढ़िया ने सोचा यह चुगली खा देगी सो कटोरा भरकर उसे भी पकड़ा दी। बेटे की बहू ने चुपके से एक कटोरा खीर खाई और कटोरा चक्की के नीचे छुपा दिया। अब भी गणेश जी नहीं आए। बुढ़िया को बहुत भूख लग रही थी। एक कटोरा खीर का भरकर किवाड़ के पीछे बैठकर एक बार फिर कहा, 'जय गणेश जी आपके भोग लगना' और खाना शुरू कर दिया तभी गणेश जी आ गए।

बुढ़िया ने कहा, 'आजा रे गणेश्या खीर खाले मैं तो तेरी ही राह देख रही थी।' गणेश जी ने कहा, 'दादी माँ मैंने तो खा ली।' बुढ़िया ने कहा, 'कब खाई' गणेश जी ने कहा, 'जब तेरे पोते-पोती ने खाई तब खाई, जब तेरी पड़ोसन ने खाई तब खाई, जब तेरी बहू ने खाई तब खाई, और जब तूने खाई तो पेट पूरा ही भर गया।' बुढ़िया ने कहा, 'बेटा और सारी बात तो सच है पर बहू बेचारी का तो नाम मत लो वह तो सुबह से काम में लग रही है उसने खीर कब खाई ?' गणेश जी ने कहा, 'चक्की के नीचे देख झूठा कटोरा पड़ा है तूने तो मेरे भोग तो लगाया। वह तो वैसे ही खा गई। बुढ़िया ने कहा, 'बेटा घर की बात है घर में ही रहने दो। बता बची हुई खीर का क्या करूँ ?' गणेश जी ने कहा, नगरी जिमा दे। लोगों को न्योता दिया तो सब हँसने लगे, बोले